



Author, [Shri Lal Bahadur Pushkar Meerapore](#) is with Assistant Commissioner of Income Tax (IRS) and Probation Officer at [LBSNAA](#) while [Trilok Singh](#) is with MA Political Science (2015-17), Kirori Mal College, DU and Founder and CEO at [IASmind](#) and the [Youth Darpan](#). [Singh](#), translates his hindi text on (वैश्विक जलवायु संकट: भारतीय संस्कृति और दर्शन में समाधान) into English on [YD](#). First published on YD.

Global Environmental Crisis: Solution in Indian Philosophy and Culture

Consumerism culture which is born by the capitalism/capital economy has made production as an universal value because the foundation of capital is based on the massive use of nature. If we find the solution area of environmental problem in Indian Philosophy and Culture we will able to aware the people towards environmental values.

'We can not buy love and water'. This proverb is going to destructed from our dictionary. When we used to read in classical book that, 'रहिमन पानी रखिये बिन पानी सब सून', this proverb is very much important if we think about the relevancy of water, but in the present environmental crisis, if we could define the meaning of '**water**', we could understand the relevancy of given proverbs. In the culture of India we have a very important role of *tree worship*. The '*Peepal tree*' is the worshiped as a symbol of married women (*Suhagan*). In eating material '*tulshi*' is considered *holy* which is a panacea for all diseases. We make a relation of '*Vilva Tree*' to god Sankar. In the Indus Valley Civilization we used to see 'stump' decorated with animal pictures and trees. Kings were very much passionate to grow the trees and digging the well.

Since thousand of years India is worshipping the forest, river, air, sea etc. We have to keep in mind the thing *worship* we should not misuse it. As per National Forest Policy 33 percent of land should be covered with the forest. In ancient period 1/3 of total land was reserved for the forest. Having 1/3 of forest is very much important for the maintaining the environmental balance on earth. It is written in 'Upanishads' that; "हे अश्वरूप धारी परमात्मा! बालू तुम्हारे उदरस्थ अर्धजीर्ण भोजन है , नदियां तुम्हारी नाडियां हैं , पर्वत-पहाड़ तुम्हारे हृदयखंड हैं , समग्र वनस्पतियां, वृक्ष एवं औषधियां तुम्हारे रोम सदृश हैं।"

It was the cultural education of India which is presented front of the society in different manner. We have to understand the relevancy of water by this fact is that, the *old civilization* is first existed aside the Indus river. We should be proud on our culture and we should follow that. This is a normal question that why people considered environment in not a serious manner.

It is often said that action change according to the thinking. Today we are facing many environmental changes due to changing view of people. According to the many environmentalist if the present environmental conditions doesn't change the temperature of earth may increased 4°C and because of this temperature many countries is going to be under water. Many *Coastal States* like 'Andaman and Nicobar Islands' and *Lakshadweep Island* is going to very hard to leave because of hot weather. There was a time when people had a very good relation with the environment and man used to see environment as a living things. But because of capital economy the environment is in danger. It is obvious that, *Consumerism Culture* will target the nature. Because the foundation of capitalism is based on the misuse of natural resources. We know very well that, we have a very big issue of *ozone layer or ozone shield* which is getting defective day by day due to pollution on earth, we have many way to save ozone layer but we have to work in a collaboration of the entire universe.

If we want to find the solution of environmental problem we have to look at Indian Philosophy and culture where nature used to considered as a living unit. We will have to look at the philosophy of Mahatma Gandhi, Mahatma Buddha and the philosophy of Jain. Mahatma Gandhi used to talk about 'Simple living and high thinking' and he had a view to minimize the consumerism culture.. We know very well consumerism culture is extremely dangerous for nature and it created many other problems. Mahatma Gandhi said, "*Earth provides enough to satisfy every man's needs, but not every man's greed*". The way Gandhi ji mentioned of Industrialization was handicraft Industry and rural Industries and these two industries were appreciated by Dr. Ram Manohar Lohia as well. Gandhi Ji also mentioned if we promote handicraft industries people will not leave their home town and we may finish the pollution which is created by heavy machines and we will able to promote sustainable development.

For protecting the earth we should have Intolerance to injustice and unscientific view. We have Science to protect Indian Philosophy, Culture and living traditions. We have to elaborate the science to the universe. Until we don't accept the Indian Living Culture of India we will not have solutions of global warming, therefore we will have to think again about the traditions and culture of India: World have two major problems one is terrorism and second is changing nature of

environment. Terrorism is attack of man on man but environmental change is attack of man on the nature. The artificial development is very much dangerous for environment. Irony is that, we are finding the artificial solutions of environmental problems. It is known that, in India environmental problem is completely scientific. We have to left the greediness and we will have to take oath to protect the environment then we will able to find the solution of Global Warming. Vedic Rishi Pray that *earth, water and generic medicines are very useful for having peaceful life. These may be source of peaceful only when we protect these resources..* Today the relevancy of environment is has become very important and we will have to take help of scientific arguments to cycle or face the problem of Global warming and Environmental Changes.

JAI HIND!

संस्थापक – सम्पादक : स्व. श्री महेन्द्रकुमार
कार्यकारी सम्पादक : विन्मय मिश्र
संप्रेष आलेख 106 : 2016-17
दिनांक 10-12-2017
प्रकाशनार्थ
फोन एवं फ़ैक्स : (0731) 2401083



(इस आलेख का उपयोग तुरंत किया जा सकता है।)

वैश्विक जलवायु संकट : भारतीय दर्शन और संस्कृति में समाधान

लाल बहादुर पुष्कर

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के उप-उत्पाद के रूप में जन्मी उपमोक्षावादी संस्कृति ने उपभोग को एक सार्वभौमिक मूल्य के रूप में स्थापित कर दिया है। क्योंकि आधुनिक पूँजीवाद की नींव प्रकृति के अंधाधुंध दोहन पर टिकी हुई है। जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने के लिए इसका समाधान भारतीय दर्शन और संस्कृति में खोजें तो हम पुनः लोगों को उन पर्यावरणीय मूल्यों के प्रति जागरूक कर सकते हैं जहाँ प्रकृति को एक सजीव इकाई के रूप में देखा जाता था। – का.सं.

“पा नी और प्रेम को खरीदा नहीं जा सकता” जैसे कहावत अब हमारे शब्दकोश से शायद जल्द ही विलुप्त होने वाली है। जब हम किताबों में पढ़ते थे कि “रहिमन पानी रखिये बिन पानी सब सून” जहाँ इस उक्ति में पानी इज्जत और मान मर्यादा का प्रतीक बन पड़ा है, वही आज के इस पर्यावरणीय संकट में पानी के शाब्दिक अर्थ को ही बचा पाए तो हम रहीम के दोहे के साथ न्याय कर पाएंगे। यह तो केवल एक बानगी है जलवायु परिवर्तन से हो रहे प्रकृति के विनाश के प्रति चिंता की।

भारतीय परम्परा में धार्मिक कृत्यों में वृक्ष पूजा का महत्व मिलता है। पीपल को पूज्य मानकर उसे अटल सुहाग से सम्बद्ध किया गया है, भोजन में तुलसी का भोग पवित्र माना गया है, जो कई रोगों की रामबाण औषधि है। बिल्व वृक्ष को भगवान शंकर से जोड़ा गया और ढाक, पलाश, दूर्य एवं कुश जैसी वनस्पतियों को नवग्रह पूजा आदि धार्मिक कृत्यों से जोड़ा गया। पूजा के कलश में सप्तनदियों का जल एवं सप्तमृत्तिका का पूजन करना व्यक्ति में नदी व भूमि को पवित्र बनाए रखने की भावना का संचार करता था। सिंधु सभ्यता की मोहरों पर पशुओं एवं वृक्षों का अंकन, सम्राटों द्वारा अपने राजचिन्ह के रूप में वृक्षों एवं पशुओं को स्थान देना, गुप्त सम्राटों द्वारा बाज को पूज्य मानना, मार्गों में वृक्ष लगवाना, कुएं खुदवाना, दूसरे प्रदेशों से वृक्ष मंगवाना आदि तात्कालिक प्रयास पर्यावरण प्रेम को ही प्रदर्शित करते हैं।

साथ ही यह सरोकार दर्शाता है कि हमारा भारतीय समाज हजारों सालों से वन, नदी, यायु, सूर्य, आदि की पूजा करता आया है, और जिसकी पूजा की जाती है वह दोहन या शोषण के लिए नहीं होती। जिस प्रकार राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार संतुलन बनाए रखने हेतु पृथ्वी का तैतीस प्रतिशत भूभाग वनाच्छादित होना चाहिए, ठीक इसी प्रकार प्राचीन काल में जीवन का एक तिहाई भाग प्राकृतिक संरक्षण के लिए समर्पित था, जिससे कि मानव प्रकृति को भली-भांति समझकर उसका समुचित उपयोग कर सके और प्रकृति का संतुलन बना रहे। उपनिषदों में लिखा गया है कि... “हे अश्वरूप धारी परमात्मा! बालू तुम्हारे उदरस्थ अर्धजीर्ण भोजन है, नदियां तुम्हारी नाडिध्यां हैं, पर्वत-पहाड़ तुम्हारे हृदयखंड हैं, समग्र वनस्पतियां, वृक्ष एवं औषधियां तुम्हारे रोम सदृश हैं।” दरअसल, यह भारत

की सांस्कृतिक शिक्षा थी जो कुछ अलग माध्यम से समाज को सिखाई व पढाई जाती थी। इसी संदर्भ में पानी की महत्ता इसी तथ्य से सिद्ध हो जाता है कि भारत की प्राचीन सभ्यता का विकास भी सिन्धु नदी के किनारे ही हुआ है। अपने प्राचीन सभ्यता और संस्कृति पर गर्व करना तभी तर्कसंगत कहा जा सकता है, जब हम उनसे उपजे मूल्यों को भी अपने जीवन का हिस्सा बनाये। यहाँ पर यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि पर्यावरण को लेकर भारत की इतनी समृद्ध और परिपक्व सांस्कृतिक विरासत होने के बावजूद आज हम भारतीयों में, लोगों में पर्यावरण को लेकर लापरवाही और जागरूकता की कमी क्यों है?

यह अक्सर कहा जाता है कि दृष्टिकोण बदलने से व्यवहार बदल जाता है। आज हम जितने भी पर्यावरणीय संकटों का सामना कर रहे हैं उसके पीछे प्रकृति को लेकर लोगों में आये दृष्टिकोण परिवर्तन काफ़ी हद तक जिम्मेदार है। पर्यावरणविदों का मानना है कि अगर वर्तमान हालात नहीं बदले गए तो दुनिया का तापमान चार डिग्री सेंटीग्रेट तक बढ़ सकता है और अगर यह हो गया तो फिर जो बर्फ का पिघलाव होगा वह अनेक देशों को समुद्र के पानी में डुबा देगा। इसके साथ ही भारत के तटीय राज्यों और अंडमान निकोबार द्वीप समूह एवं लक्ष्यद्वीप तथा यूरोप के ठंडे देश इतने गर्म हो सकते हैं कि यहाँ की आबादी के लिए खतरनाक साबित हों। इन सबके बरक्स एक ऐसा भी समय था जब मनुष्य प्रकृति से सान्निध्य रखता था और प्रकृति के अस्तित्व के साथ अपने अस्तित्व को जोड़ता था और प्रकृति को एक सजीव इकाई के रूप में देखता था। लेकिन पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के उप-उत्पाद के रूप में जन्मी उपभोक्तावादी संस्कृति ने उपभोग को एक सार्वभौमिक मूल्य के रूप में स्थापित कर दिया है। जाहिर सी बात है इस उपभोग की संस्कृति का स्वाभाविक शिकार प्रकृति ही होगी, क्योंकि आधुनिक पूंजीवाद की नींव प्रकृति के अंधाधुंध दोहन पर टिकी हुई है। ज्ञातव्य है कि जलवायु परिवर्तन और ओजोन परत की समस्या से लिए लिए वैश्विक रूप से जो उपाय किये जा रहे हैं उसे तो हम सामूहिक रूप से अपनाये ही साथ ही उनमें से भी जो उपाय हमारे समुदाय और संस्कृति के अनुकूल हो उसे भी बढ़ाया दे क्योंकि यह समस्या वैश्विक भले है लेकिन इसे स्थानीय पहल का हिस्सा बनाना भी आवश्यक है।

इसी संदर्भ में यदि हम जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने के लिए इसका समाधान भारतीय दर्शन और संस्कृति में खोजें तो हम पुनः लोगों को उन पर्यावरणीय मूल्यों के प्रति जागरूक कर सकते हैं जहाँ प्रकृति को एक सजीव इकाई के रूप में देखा जाता था। इसके लिए महात्मा गाँधी का दर्शन, महात्मा बुद्ध एवं जैन दर्शन की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार देश और विदेश ने व्यापक स्तर पर करना होगा। गाँधी सादा जीवन उच्च विचार की बात करते हैं। गाँधी का यह दर्शन हमारी उपभोग की संस्कृति को सीमित करने का संदेश देती है। ज्ञातव्य है कि उपभोग की संस्कृति ने ही प्रकृति को बड़ी निदर्यता से दोहन को बढ़ावा दिया है, जिसने जलवायु परिवर्तन जैसे वैश्विक समस्याओं को जन्म दिया है। गांधीजी ने कहा था कि प्रकृति के पास दुनिया की जरूरतों को पूरा करने के लिए सब कुछ है, पर वह किसी के लालच की पूर्ति नहीं कर सकती। गाँधी के बताए हुए ग्रामीण और कुटीर उद्योग, जिसे लोहिया जी ने छोटी इकाई तकनीक और छोटी मशीन के रूप में प्रस्तुत किया था, को अमल में लाया जाए तो करोड़ों लोगों को रोजगार के लिए अपने घर से दूर नहीं जाना पड़ेगा। साथ ही बड़े-बड़े मशीनों और उद्योगों से होने वाला प्रदूषण भी नहीं होगा जो कि सतत विकास की अवधारणा को बल प्रदान करेगा।

पृथ्वी की रक्षा के लिये पर्यावरणीय प्रदूषण, अन्याय और अशुचिता के खिलाफ असहिष्णुता होना जरूरी है। भारतीय दर्शन, जीवन शैली, परंपराओं और प्रथाओं में प्रकृति की रक्षा करने का विज्ञान छुपा है। आवश्यकता दुनिया के सामने इसकी व्याख्या करने की है। जब तक हम भारतीय दर्शन के अनुरूप जीवन शैली नहीं अपनायेंगे तब तक ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्या का समाधान नहीं मिलेगा। इसलिये प्रकृति की रक्षा करने वाली परंपराओं और संस्कृति को पुनर्जीवित करने की जरूरत है। विश्व के सामने आतंकवाद और जलवायु परिवर्तन दो बड़ी चुनौतियाँ हैं। आतंकवाद मनुष्य द्वारा मनुष्य पर हमला है जबकि जलवायु परिवर्तन मनुष्य द्वारा प्रकृति पर किया गया हमला है। कृत्रिमता

के साथ किया गया विकास प्रकृति के लिये एक समस्या बन गया। विडम्बना यह है कि इसका कृत्रिम समाधान ढूँढा जा रहा है। विदित हो कि पर्यावरण को लेकर भारतीय ज्ञान पूरी तरह वैज्ञानिक है। हमें लालच छोड़ने, पृथ्वी को नष्ट नहीं होने देने और आवश्यकता के अनुरूप प्रकृति के संसाधनों का उपभोग करने का संकल्प लेने से ही ग्लोबल वार्मिंग का समाधान मिलेगा। वैदिक ऋषि प्रार्थना करता है कि पृथ्वी, जल, औषधि एवं वनस्पतियां हमारे लिए शांतिप्रद हों। ये शांतिप्रद तभी हो सकते हैं जब हम इनका सभी स्तरों पर संरक्षण करें। तभी भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण की इस विराट अवधारणा की सार्थकता है, जिसकी प्रासंगिकता आज इतनी बढ़ गई है। साथ ही हमें ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन की समस्याओं को हल करने के लिये वैज्ञानिक तर्कों के साथ सांस्कृतिक पुनर्जागरण की शुरुआत करना होगी। (सप्रेस)

❖ श्री लाल बहादुर पुष्कर पर्यावरणीय मुद्दों पर लिखते रहते हैं।

Thank's.